अलंकार का स्वरूप एवं महत्व

प्र० = अलंकार किसे कहते हैं? काव्य में अलंकार का क्या स्थान है अथवा अलंकार के महत्व पर प्रकाश डालिए।

उ० = मनुष्य की प्रवृत्ति सौन्दर्य प्रधान रही है। उसकी इसी प्रवृत्ति ने अलंकारों को जन्म दिया है। शरीर की शोभा आभूषणों से बढ़ती है। शरीर के सौन्दर्यवृद्धि के लिए आभूषणों का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार भाषा की सुन्दरता बढ़ाने के लिए, उसे प्रभावपूर्ण बनाने के लिए काव्य में रमणीयता अथवा चमत्कार का आश्रय लेना पड़ता है। यही रमणीयता और चमत्कार अलंकार कहलाता है।

अलंकार शब्द की रचना 'अलं' तथा 'कृ' धातु से हुई है। अलंकार शब्द में 'अलं' और 'कार' दो शब्द हैं। अलं का अर्थ है भूषण अर्थात् जो अलंकृत करे, वह अलंकार है। 'अलंकरोति इति अलंकार:' अथवा अलंक्रियते अनेन स: 'अलंकार:'।

भारतीय काव्य-शास्त्र के आचार्यों ने अलंकारों की जो परिभाषाएँ दी हैं, वे इसी अर्थ को द्योतित करती हैं। आचार्य दण्डी ने अलंकारों की परिभाषा देते हुए लिखा है —

'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते'

अर्थात् काव्य की शोभा करने वाले धर्मों को अलंकार कहते हैं। आचार्य वामन ने अलंकार को सौन्दर्य का पर्यायवाची माना है। उनका कथन है - 'काव्यं ग्राह्यलंकारात्' उनका आशय यह है कि अलंकार गुणों का उत्कर्ष और सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। आचार्य भामह के अनुसार - शब्द और अर्थ का वैचित्र्य ही अलंकार है। —

'वक्राभिधेय शब्दोक्तिरिष्टावाचामलंकृति'। रसवादी आचार्य विश्वनाथ के विचार से रस आदि का उपकार कर काव्य की शोभा बढ़ाने वाले शब्द और अर्थ के जो अस्थायी धर्म हैं उन्हें अलंकार कहते हैं। इस प्रकार सभी परिभाषाओं से

Scanned with CamScanner

अर्थात यही है कि अलंकार वाणी के विभूषण हैं अलंकार काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म हैं।

काव्य में अलंकारों का स्थान अथवा महत्व —

आचार्यों की अलंकार-विषयक मान्यतायें भिन्न-भिन्न हैं। कुछ आचार्य काव्य के लिए अलंकारों को गौण मानते हैं और कुछ आवश्यक। ध्वनिवादी आचार्य आनन्द अलंकारों को रस के अंग के रूप में मान्यता देते हैं। आचार्य मम्मट रसवादी आचार्य हैं वे भी अलंकार अलंकारों का उद्देश्य रस को पुष्ट करना मानते हैं। उनके अनुसार अलंकार हार आदि आभूषणों के समान हैं और वे रस के उपकारक हैं। मम्मट काव्य के लक्षण में 'अनलंकृती पुनः क्वापी' लिखकर काव्य में अलंकारों की अनिवार्य उपयोगिता के आग्रह को समाप्त कर दिया था है।

आचार्य कुन्तक ने 'सालंकारस्य काव्यता' का प्रतिपादन कर अलंकार को काव्य का अविभाज्य अंग माना है। अलंकारवादी आचार्य पीयूषवर्षी जयदेव ने मम्मट की मान्यता का उपहासात्मक विरोध करते हुए लिखा है कि, जो काव्य को अलंकार रहित मानता है, तो अपने को पंडित मानने वाला वह व्यक्ति अग्नि को उष्णतारहित क्यों नहीं मानता। भामह भी अलंकारवादी हैं और उनका मत है कि आभूषण से रहित सुन्दरी का मुख किस को अच्छा नहीं लगता है —

'न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितामुखम्'

रीतिकालीन आचार्य केशवदास का भी यही मत है —

जदपि सुजाति सुलच्छनी सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिन न विराजई कविता वनिता मित्त॥

किन्तु ध्वनि सिद्धान्त की प्रतिष्ठा होने पर अलंकारों की सत्ता आवश्यक नहीं रही। आचार्य विश्वनाथ अलंकार के विषय में लिखते हैं —

'अलंकार शब्द और अर्थ का अस्थिर धर्म है।'

वे अलंकार को रस रूपी आत्मा का उपकारक

मानते हैं। आचार्य विश्वनाथ की मान्यताओं को स्थापना ध्वनिवादी आचार्यों ने की। इनके अनुसार अलंकार बाह्य प्रसाधन 'कटक-कुण्डल' की तरह शब्दार्थ रूप काव्य-शरीर का शोभातिशायी रूप है। पूर्व ध्वनि-काल में अलंकार शोभाकारक था अब वह शोभावर्द्धक हो गया। परवर्ती काल में राजशेखर, हेमचन्द्र, रुद्रभट्ट इत्यादि अनेक विद्वान आचार्यों ने आनन्दवर्द्धन और मम्मट की मान्यता का पूर्ण अनुकरण किया।

हिंदी आचार्यों में केशवदास अलंकारहीन कविता के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते। देव अलंकृत काव्य को उत्कृष्ट मानते हैं—

कविता कामिनी सुखद पद, सुबरन सुजस सुजाति।
अलंकार पहिरे अधिक अद्भुत रूप लखाति॥

आधुनिक आचार्यों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अलंकार को रोचक, सुबद्ध और प्रभावशाली प्रणाली माना है। उन्होंने लिखा है— "अलंकार है क्या? वर्णन करने की अनेक प्रकार की चमत्कारपूर्ण शैलियाँ, जिन्हें काव्यों से चुनकर प्राचीन आचार्यों ने नाम रखे हैं और लक्षण बनाये।"

सुमित्रानन्दन पंत 'पल्लव' की भूमिका में लिखते हैं— "अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं। भाषा की पुष्टि के लिए, राग की पूर्णता के लिए आवश्यक उपादान हैं।"

वास्तव में अलंकार शब्दान्तर से उक्ति चमत्कार का नाम है। अलंकार सम्प्रदाय के आचार्य प्रत्येक चमत्कारपूर्ण उक्ति काव्य पद की अधिकारी है और प्रत्येक काव्योक्ति में चमत्कार अनिवार्यतः विद्यमान रहता है। रसवादी आचार्यों की मान्यता इससे भिन्न है। रामचन्द्र शुक्ल, जो आधुनिक युग के रसवादी आचार्य हैं, ने उक्ति-चमत्कार अथवा सूक्ति को काव्य पद दिया ही नहीं है। आधुनिक युग के समर्थ आलोचक डॉ० नगेन्द्र भी कोरे उक्ति चमत्कार को काव्य नहीं मानते हैं। उनका मत है

कि उक्ति चमत्कार में भाव का प्रयोग न होने पर आनन्द प्रदान नहीं करता। वास्तविकता यह है कि भाव की रमणीयता, कोमलता, सुकुमता साधारण शब्द द्वारा बिना किसी प्रकार की वक्रता के व्यक्त नहीं की जा सकती। अतः उक्ति-चमत्कार का भी काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है। डा० नगेन्द्र के मतानुसार अलंकार अतिशय के चमत्कार द्वारा वृत्तियों को उद्दीप्त करके उन पर प्रहार करके तीव्रतर बना देते हैं। अलंकार रस की अनुभूति में तीव्रता एवं गहराई प्रदान करते हैं। इस रूप में अलंकार रसानुभूति में योग देते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अलंकार साधन हैं, साध्य नहीं। स्वाभाविक रूप से प्रयोग किए गए अलंकार काव्य की शोभा बढ़ा देते हैं। अलंकार काव्य के आत्म-तत्व के सहायक हैं। अभिव्यक्ति के लिए अलंकारों का विशेष महत्व है। अतः काव्य में अलंकारों का महत्वपूर्ण स्थान है। रस के उत्कर्ष के रूप में, रसोद्दीपक के रूप में, चमत्कार की सृष्टि के रूप में और शब्द तत्व के अलंकरण के रूप में अलंकारों का निर्विवाद महत्व है।

Scanned with CamScanner